आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 16
वैशाख शुक्ला एकादशी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 मई से 5 जून 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री सत्यव्रत सामवेदी
श्री बलदेव राज आर्य
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्रीमती सरोज वर्मा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

सतलोक आश्रम करोंधा जिला रोहतक (हरि.) से रामपाल एवं उनके समर्थकों को आश्रम से बाहर कर ताला लगाया। आचार्य बलदेव जी को साधुवाद।

-संपादकीय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के सतत् प्रयास से एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में दिनांक 14 मई 2013 को सतलोक आश्रम करोंधा जिला रोहतक को पाखण्डी रामपाल दास एवं उसके सहयोगियों से हरियाणा प्रशासन की मदद से आश्रम को आतताई एवं समाज कंटकों के चंगुल से मुक्त कराया। इसके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान उनका आभार प्रगट करता है।

विदित सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सन् 2004 से इस आश्रम में राष्ट्रविरोधी, अनैतिक गुरुडमवाद पाखण्ड एवं आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द विरोधी गतिविधियां चल रही थी। वहां के ग्रामवासी तथा भद्र आर्य पुरुषों से ऐसी कार्यवाही सहन नहीं हो सकी। उन्होंने इसका डटकर विरोध किया। इसी विरोध के कारण 2006 में एक आर्य युवक सोनू पुत्र बलवान की हत्या कर दी गई। प्रशासन ने आश्रम पर छापा मारा जिसमें अनेक अनैतिक कृत्यों धर्मविरोधी कार्यो, आपराधिक मामलों, अश्लील सामग्रियों व असामाजिक गतिविधियों के अनेक प्रमाण प्राप्त हुए। आश्रम पर ताला लगा दिया गया। रामपाल दास अपने आपको कबीर का अवतार घोषित करता है, उसे गिरफ्तार कर लिया व दो वर्ष तक कारावासा भोगने के बाद भी वह आज तक जमानत पर छूटा हुआ है।

सन् 2009 में अलवर के मुख्य बाजार होपसर्कस एवं बस स्टैण्ड पर 10-12 बड़े पोस्टर चिपकाये गये जिसमें हिन्दु धर्म के आराध्य देव ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवों कि आलोचना एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निन्दा सम्बन्धी बातें लिखी हुई थीं। अपने आपको कबीर पंथी संत कहने वाले रामपाल दास द्वारा प्रकाशित व प्रचारित पोस्टरों कि जानकारी जब आर्य समाज अलवर एवं शहर के प्रबुद्ध नागरिकों को मिली तो उनका आंदोलित होना स्वाभाविक था। अत: आर्य समाज के नेतृत्व में एक विशाल सभा दिनांक 4.10.2009 को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के सामने मेन रोड़, मन्नी का बड़ चौराहे पर अमरमुनि वानप्रस्थी के संयोजन में आयोजित की गई। जिसमें रामपाल के पाखण्ड का भंडा-फोड किया गया। प्रशासन द्वारा मुख्य मंत्रीजी को एक मांग पत्र भेजा गया जिसमें रामपाल व उसके आश्रम द्वारा चलाई जाने वाली असामाजिक गतिविधियों पर रोक लगाने एवं भविष्य में ऐसे पोस्टरों के माध्यम से समाज में भ्रम फैलाए जाने पर रोक लगाई जाने की मांग की गई। सभा में सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया।

रामपाल अदालती कार्यवाही में संलग्न रहा उसने धन, बल एवं व्यक्तिगत राजनैतिक सम्पर्क से उच्चतम न्यायालय से सतलोक आश्रम का ताला खुलवाने का आदेश इसी वर्ष के प्रारम्भ में प्राप्त कर लिया। इस पर आर्यो ने फिर अंगडाई ली। प्रशासन को विरोध पत्र लिखा, धरना दिया। प्रशासन ने आश्वासन दिया कि हम शीघ्र ही यहां समाज विरोधी गतिविधियां बंद करवा देंगे एवं आश्रम को खाली करवा देंगे। एक माह तक भी कोई कार्यवाही नहीं होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने सार्वदेशिक सभा के सहयोग से एवं ग्रामवासी व राजस्थान के सैकड़ों आर्य समाजियों के सहयोग से बड़ी संख्या में एकत्रित होकर आश्रम को खाली करवाने के लिए प्रशासन पर जोर दिया, धरना दिया

है जीव मरने मारनेवाला यही जो मानते। यह मारता मरता नहीं दोनों न वे जन जानते।।

गया। इस पर प्रशासन ने लाठी, आँसू गैस व गोलिया बरसाई। इसी कारण 2 नवजवानों एवं एक महिला की मृत्यु हो गई। आखिर प्रशासन एवं रामपाल को झुकना पड़ा। दिनांक 15 मई 2013 को पूर्ण रूप से आश्रम खाली करा कर ताला लगा दिया गया। लेकिन अभी धरना व प्रदर्शन जारी है। सभी आर्य समाजें निम्नलिखित ज्ञापन को अपनी समाज की ओर से निम्नलिखित प्रशासनिक अधिकारियों को अवश्य भेजे।

अपील:- रामपाल दास के अनैतिक कृत्यों, धर्मविरोधी कार्यों, आपराधिक मामलों, अश्लील सामग्रियों व असामाजिक गतिविधयों के विरोध में उपायुक्त महोदय (रोहतक) के माध्यम से मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार, गृहमंत्री हरियाणा सरकार, उपायुक्त रोहतक, एस.पी. रोहतक, एस.डी.एम. रोहतक को पत्र के माध्यम से हरियाणा सरकार को धारा-145 के आधार पर इस असत्लोक आश्रम को अपने अधीन लेने हेतु।

* प्रशासन पर यह आपेक्ष है कि वह एकपक्षीय होकर भू-स्वामियों के विरूद्ध तथा हत्यारोपी रामपाल दास के समर्थन में कार्य कर रही है। जब 17.4.2013 को न्यायालय ने 24.4.2013 तक स्टेटस्को (यथास्थिति) का निर्णय ले लिया तो इससे पूर्व ही लगी हुई आश्रम में धारा-144 के आदेश का पालन न करते हुए प्रशासन इस जगह पर रामपाल दास के हजारों आपराधिक अनुयायियों को इकट्ठा करके न्यायालय के इस निर्णय की अवमानना क्यों कर रहा है अथवा अवमानना क्यों की?

* 24.4.2013 तक स्टेटस्को यथास्थिति का निर्णय न्यायालय के करने के उपरान्त भी प्रशासन आज भी इस असत्लोक आश्रम में मोर्चाबंदी तथा निर्माण कार्य पुलिस की उपस्थिति में करवाकर न्यायालय के आदेश का उल्लंघन करके उसके आदेश की अवमानना किस आधार पर कर रहा है?

* रामपाल दास तथा इसके अपराधी अनुयायियों का यह इतिहास रहा है कि पहले अपनी विचारधाराओं को न मानने वाले व्यक्तियों पर स्वयं हमला करता व करवाता रहा है तथा अपने से भिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों पर झूठे आरोप व मुकदमे करता रहा है। उदाहरण प्रस्तुत है- 2006 में सैकड़ों व्यक्तियों को गोलियों से घायल किया तथा एक युवक की हत्या की। इससे पूर्व ग्राम छुड़ानी (झज्जर) के महन्त ब्रह्मस्वरूप तथा उसके सेवकों को लोहे की राडों से पीटकर अधमरा किया। 2006 में ही अपने आपराधिक अनुयायियों को छुड़वाने के लिये, अपने सहयोगियों के साथ डीघल (झज्जर) की पुलिस चौकी पर हमला किया। पंजाब के सिख भाइयों के साथ झगड़ा किया, जिसके कारण उन्होंने रोड जाम करके इसके 15 अनुयायियों पर कोर्ट में केस दर्ज करवाया। अभी इसने 9.4.2013 को चारों तरफ के ग्रामों से इकट्ठे हुए लोगों के उपरान्त, डी.सी., एस.डी.एम., एस.पी. तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के 82 वर्षीय वृद्ध साधु आचार्य बलदेव के ऊपर पत्थरबाजी करने के झूठे आरोप लगाकर रोहतक कोर्ट में झूठा केस दर्ज करवाया है। हरियाणा के जिला जीन्द के कन्डेला ग्राम में एक सनातनी साधु बाबा पर कई बार कातिलाना हमला करवा चुका है तथा बार-बार उसकी हत्या करने की धमकी दे चुका है। उस इलाके की जनता उस साधु बाबा की रक्षा के लिये कई बार इकट्ठी हो चुकी है। हम हरियाणा सरकार से अपील करते हैं कि इसके ऊपर धारा-307,302,120,140,420 आदि अनेक आपराधिक केस दर्ज हैं। यह दो वर्ष तक जेल में रहकर जमानत पर छूटा हुआ है। इसके उपरोक्त अपराधों को देखते हुये इसकी जमानत तुरन्त रद्द होनी चाहिये, जिसके कारण जनता इसके पापों से छुटकारा पा सके तथा इसके दोनों बरवाला (हिसार) और करौंथा (रोहतक) के असत्लोक आश्रमों को सरकार इसके लड़ाई-झगड़े के कारण जनता की शान्ति के लिए धारा-145 के अधीन अपने हाथ ले लेवे जिससे पापों की निवृत्ति के उपरान्त समाज सुख-शान्ति से जीवित रह सके।

* इस धर्मनिरपेक्ष देश में यह व्यक्ति भारत के प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों के महापुरुषों पर आक्षेप करता रहा है। जैसे सनातन धर्म के पुरुषोत्तम श्रीराम, योगिराज श्रीकृष्ण पर, वैदिक धर्म के मानने वाले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर, सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक तथा स्वयं को कबीर पंथी कहने वाला यह व्यक्ति कबीर के मन्तव्यों के विरुद्ध असम्भव, अप्राकृतिक, अनर्गल बातों से सभी धर्मो का अपमान करता है। जिस वेदमंत्रों का उच्चारण यह स्वयं भी नहीं कर सकता उस विषय में कहता है कि कबीर ने भैंसे के मुख से वेदमंत्रों का उच्चारण करवाया। अत: इस धर्मनिरपेक्ष देश में सभी धर्मो के सम्मान के लिए इस व्यक्ति का पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो तथा दूरदर्शन पर तुरंत प्रसारण बंद करवाया जाये।

* **Scheduled Road Act & Schedule Road Rules** के अनुसार भारत में किसी भी राष्ट्रीय राजमार्ग के 30 मीटर की दूरी तक कोइ निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता है और माननीय उच्च न्यायालय पंजाब व हरियाणा सरकार को समय-समय पर ऐसे निर्माणों को गिराने के आदेश दिए हैं। तथाकथित रामपाल दास ने राष्ट्रीय राजमार्ग रोहतक-झज्जर पर राष्ट्रीय राजमार्ग के 30 मीटर के अंदर तथाकथित सतलोक आश्रम बनाया हुआ है और वर्तमान में भी पुलिस अपनी सुरक्षा के अंदर निर्माण कार्य करवाती हुई 'बाड़ ही खेत को खावे' वाली कहावत को चरितार्थ कर रही है। यह जिला पुलिस प्रशासन तथा जिला प्रशासन द्वारा खुल्लमखुल्ला हाईकोर्ट के आदेश का उल्लंघन है।

* रामपाल दास ने ग्राम करौंथा व डीघल के बीच खेत की जमीन पर जो निर्माण कार्य किया है वह अवैध है, क्योंकि 'चेंज ऑफ लैण्ड यूज' की इजाजत सरकार से लिये बिना तथा विकास के लिये दी जाने वाली फीस दिए बिना निर्माण कार्य अवैध है और सरकार ऐसे निर्माण कार्य को आये दिन गिरा भी देती है, परन्तु रामपाल दास द्वारा किये गये अवेध निर्माण को गिराने की बात तो दूर रही, अपितु स्वयं पुलिस प्रशासन, सरकार व जिला प्रशासन की जानकारी के उपरान्त स्वयं उपस्थित होकर निर्माण कार्य करवा रही है। यह एक समझ से बाहर की बात है कि सरकार स्वयं गैर-कानूनी कार्यो में क्यों संलिप्त है?

जैसे पुराने त्याग कर नर वस्त्र नव बदलें सभी। यों जीर्ण तन को त्याग नूतन देह धरता जीव भी।।

ही सुरक्षित है। जबकि हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए खालसा पंथ की स्थापना करते हुए गुरु महाराज ने कहा था कि-

'सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै।
सबे धर्म हिन्दु तुरक दुद भाजे।।'

सन् 1812 में 'स्केच ऑफ सिख' के लेखक जॉन मैल्किन एवं कैकर आर्थर मैकालिफ से बढ़कर 'खुशवन्त सिंह हिन्दु धर्म की रक्षा पंक्ति के मूल आधार सिख समुदाय व सिखों की धार्मिक पहचान चिन्ह पर चोट करने पर आमादा हुए हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स चंडीगढ़, 18 फरवरी 2013 के अंक में 'Aum & Ego' शीर्षक लेख द्वारा सिखों की हिन्दुत्व पहचान वाले 'ओंकार' शब्द का अनर्गल-वेबुनियाद-शैतानियत से परिपूर्ण अर्थ करने को उद्यत हुए है।'

भक्ति में शक्ति के प्रतीक सिख भाइओं के दैनिक जीवन की शुरुआत प्रभात बन्दन-भक्ति-भजन एक ओंकार ''ओ३म्'' शब्द की व्याख्या इन्हें भारत में उपलब्ध नहीं हो पायी। होती भी कैसे खून तो इनके पुरखों से अंग्रेजों के एिल गद्दारी से विषाक्त है? जिस ''ओ३म्'' ओंकार ''प्रणव'' को भारत के सभी मूल वंशज (हिन्दु-जैन-बौद्ध-सिख) रोम-रोम में धारण किये हुए हैं जिसका 'अकार', 'उकार', 'मकार' अर्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में स्पष्ट दिया है। खुशवन्त सिंह आर्य समाज व सत्यार्थ प्रकाश के बारे में न जानते हों यह संभव नहीं- खैर। खुशवन्त सिंह जिसका अर्थ आक्सफोर्ड डिक्सनरी से आप इसका अर्थ अहंकार-अभिमान लेते हैं। क्या भला, भारतीय धर्म की मूल आत्मा अहंकारी-अभिमानी है? सिख गुरुओं से अपने को बड़ा समझने की भूल करते खुशवन्त सिंह ''ओंकार गुरुमुख तरे'' ''ओंकार वेद निरमए'' ''दिये तले अन्धेरा जादू-वेद पाठ मति पापा खाह।'' ''असंखग्रंथ वेद पाठ- चारे वेद होए सचिआर'' ''ओंकार ब्रह्मा उत्पत्ति-ओंकार किया जिन चित्ति। ओंकार सैल गुगमये-ओंकार वेद निरमए।। औंकार शब्द उधरे-ओंकार गुरुमुखि तरे।। खुशवन्त सिंह वेद पर प्रहार कर फरमाते हैं ''The gurubani warns the people against having too much of it'' यानी बकौल खुशवन्त ''गुरुवाणी लोगों को सावधान करती है इस ओ३म् को बहुत कुछ मत जानो यह गुरुओं और गुरबाणी से भी घोर घात है।'' खुशवन्त सिंह को इस व्याख्या की क्या आवश्यकता पड़ी? सुरजीत सिंह वरनाला ने कभी कहा था कि खुशवन्त के प्रत्येक लेख में सुरा-सुन्दरी व मांस की चर्चा मिलती है, लगता है कि अंग्रेजों से बढ़कर ये सिखों को हिन्दुत्व से पृथक कर-देखना चाहते हैं।

ओ३म् का अर्थ अकार (विराट-अग्नि विश्वादि) उकार (हिरण्यगर्म वायु तेजसादि) मकार (ईश्वर आदित्य प्रज्ञादि) है। इस अर्थ में महान प्रभु की अनगिनत अपार शक्ति तो निहित लगती है पर अंहकार-अभिमान कहाँ दिखता है? फिर गुरुद्वारों के मुख्य द्वार पर जो ''एक ओंकार'' लिखा होता है। वह क्या अहंकार-अभिमान बढ़ाने व इसकी महिमा मण्डन के लिए है? सिखों के कौनसे कर्मकाण्ड व पर्व एवं कार्य है जो एक औंकार की जय के बिना होते हों?

खुशवन्त सिंह ''ओंकार'' के अवमूल्यन द्वारा देश व हिन्दुत्व की सौहार्द मिटा, कमजोर कर अपने ''गद्दार पिता का ''पितृ ऋण'' चुकाना चाहते है। जिस हिन्दुत्व की रक्षार्थ खालसा पथ स्थापित करते हुए दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने कहा था।

''सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै, सवे धर्म हिन्दु तुरक दुद भाजे।''

नवें गुरु ने सारे देश में जन जागृति, उत्साह, उत्सर्ग की ज्योति जलाई तभी तो -

तिलक जनेऊ राखा प्रभु ताका। कीन्हु व यो कुलमहि साका।।
साघत हेतु इति जिन्हीं करी। शीश दिया पर सीई न उचरी।।

रामगाडडी महला 9 पृष्ट 219 में भी नवें गुरु तेग बहादुर के ये बचन-

साधुमन का मानु तिआगऊ ।।
कामक्रोध संगति दुरजन की ताते। अहिनसा भगाऊ।।
सुख-दुख दोनों सम करि जाने अउरु मान-अपमान।
हरख सोग सोगते रहे, अतीतातिनि जगी तनु पुद्धाना।।
असतति निन्दा दोऊतिआगे, खोजे पदु निरवाना।।
जन नानक इह खुलु किठिनु है किन्हूं गुरु मुखि जाना।।

ये कथन गीता के निम्न श्लोकों की भांति है-

यस्वान्नों द्धिजते लोकोलोकान द्धिजते चय:।
हर्ष भर्षभयोदेगैर्मुक्ता य: स च मे प्रिया।।
समौ शत्रौ च मित्रे च तथा माना अपमानयो:।
शीतौष्ण सुख दुखेषु सम: सर्विवर्जिता।।
तुल्य निन्दा स्तुति मौनी संतुष्टो: येन केन चित 22
अनिकेत: स्थिरमतिर्भक्ति मान्मेप्रियो नर:।। (गीता 12/15-18-18)

तभी गुरु गद्दी के विवाद से परे रहकर गुरुतेगबहादुर जन चेतना, जन-शिक्षण व आत्मोन्नति हेतु धीर-वीर गम्भीर संत गुरु का स्थान पा सके। आखिर चैत्र सुदी चतुर्दशी सम्वत् 1722 सोमवार (20 मार्च,1664) प्रबल जन दबाव के बाद नवें गुरु गद्दी को प्राप्त किया।

पाठक विचारें कि गद्दार पुत्र अंग्रेजियत से जन्मा पला पोसा पनपा यही तो कर सकता है इमली पेड़ का पत्ता-पत्ता खट्टा होता है तो इनकी ओंकार की व्याख्या इनके दूषित रुधिर का बयान करता है। सुरजीत सिंह बरनाला की तरह सिख विद्वान इन्हें गंभीरता से नहीं लेते मगर ऐसे हिन्दुत्व का डंका बजाने वाला संघ परिवार जिसके सभी प्रकार के प्रकोष्ठ प्रकल्प अनेक समाचार पत्र चैनल हैं- सिख संगत है उनके द्वारा इसका प्रतिवाद व माकूल कार्यवाही करनी चाहिये।

आर्य समाज और इसके अनुयायी तो मां भारती के चरणों में बिना किसी आदेश निर्देश की प्रतीक्षा किये संलग्न हैं ही।

ऐसे समय जब ''ओंकार'' पर आक्रमण हो सिख दर्शनशास्त्रियों और नेताओं को खुशवनत सिंह को सबक सिखाना चाहिए।

यशपाल 'यश' एडवोकेट, लेखक-पत्रकार-प्रदेशाध्यक्ष, जयपुर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय- 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 दूरभाष 011-23360150, 23365959
Email : aryasabha@yahoo.com Web : www.thearyasamaj.org IVRS No. 011-23488888

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

1. युवक/युवती का नाम : ..... गौत्र .....
2. जन्मतिथि: ..... स्थान : ..... समय .....
3. रंग ..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) .....
   .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता .....
   ..... मासिक आय .....

पारिवारिक विवरण

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसाय .....
   ..... मासिक आय .....
7. पूरा पता .....
   .....
   दूरभाष ..... मोबाइल ..... ईमेल .....
8. माता का नाम ..... शिक्षा ..... व्यवसाय .....
9. भाई ..... विवाहित ..... अविवाहित..... बहन ..... विवाहित ..... अविवाहित.....
10. मकान निजी/किराये का है .....
11. किस आर्य समाज से सम्बन्धित हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) चिन्ह लगाएं : विधुर ( ) विधवा ( ) तलाक ( ) विकलांग ( )
14. विशेष : किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में दें: .....
    .....

दिनांक ..... पिता / संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट: 1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रू. 200/- का ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजने का कष्ट करें। विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क रू. 100/- रखा गया है।
2. विवाह संबंध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी संतुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
3. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं।
4. इस फार्म की फोटो कॉपी प्रति भी मान्य होगी। 5. विशेष आग्रह : अपने रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य साथ लावें।

जन्मे हुए मरते, मरे निश्चय जनम लेते कहीं। ऐसी अटल जो बात है उसकी उचित चिन्ता नहीं।

आर्य परिवार युवक-युवती पाँचवा वैवाहिक परिचय सम्मेलन रविवार, 14 जुलाई 2013 को अब तक 200 से अधिक रिश्ते हुए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पाँचवा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी 14 जुलाई 2013 रविवार को प्रात: 10 बजे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 नई दिल्ली पर आयोजित किया जा रहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि 25 जुलाई 2010, 24 अप्रैल 2011, 8 अप्रैल 2013 एवं 28 अक्टूबर 2012 को हुए आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों के अच्छे परिणाम आए है। जानकारी मिली है कि चारों सम्मेलनों से अब तक लगभग 200 से अधिक रिश्ते हो चुके है। इस बार इसकी उपयोगिता का दायरा बढ़ाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री अर्जुनदेव चड्ढा को आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का राष्ट्रीय संयोजक मनोनीत किया हैं।

इस बार राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने जा रहें पाँचवे आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु आर्य कार्यकर्ता आर्य परिवार से सम्पर्क बना रहे है। राजस्थान क्षेत्र के संयोजक अमरमुनि जी ने बताया कि आर्य परिवारों में आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन के प्रति काफी उत्साह है तथा वे अपने विवाह योग्य बच्चों के रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं। आर्य जी ने यह भी बताया कि बायोडाटा फार्म भरकर साथ में 200 रू. का ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम, 15 हनुमान रोड़ नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते है।

रजिस्ट्रेशन फार्म मो. नं. 09540040339 (श्री विनय आर्य) पर अपने डाक का पता भेजकर मंगा सकते है, अथवा हमारी वेबसाईट- www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी कर सकते है। रजिस्ट्रेशन फार्म 30 जून, 2013 तक सभा कार्यालय में भिजवा देवें, जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके।

श्री विनय आर्य ने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आर्य आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी।

प्रान्तीय संयोजक,

नोट:- इसी अंक के पृष्ठ 5 पर फार्म छाप दिया गया है आप इसे भी भर कर शुल्क सहित रजिस्ट्रेशन कराने के लिए भेज सकते है।

आर्य समाज श्रीगंगानगर के द्वारा प्रान्तीय व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 25 मई से 2 जून 2013 तक

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के अन्तर्गत युवा संगठन आर्य वीर दल का प्रान्तीय 'आर्य वीर एवं शाखा नायक श्रेणी का आवासीय प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज, श्रीगंगानगर के संयुक्त तत्वावधान में भोपालवाला आर्य उ.मा.विद्यालय, श्रीगंगानगर में आयोजित किया जा रहा है।

शिविर की विशेषताऐं-

* प्रात: 4 बजे जागरण से रात्रि 10.00 बजे तक सुव्यवस्थित एवं अनुशासित दिनचर्या।
* सुयोग्य प्रशिक्षकों एवं विद्वानों द्वारा मार्ग-दर्शन एवं प्रशिक्षण।
* ईश्वर, वेद, योग, जीवन उद्देश्य, आयुर्वेद, नशामुक्ति आदि पर चर्चा एवं प्रवचन।
* प्रात: सायं संध्या, यज्ञ, शुद्ध एवं सात्विक भोजन व्यवस्था।
* समापन समारोह पर भव्य व्यायाम-प्रदर्शन व पुरस्कार वितरण।
* सम्पूर्ण आवासीय शिविर में स्वस्थ व चरित्रवान्, धार्मिक जीवन का निर्माण करना एकमात्र उद्देश्य।

शिविर हेतु आवश्यक नियम-

* प्रति शिविरार्थी प्रवेश पंजीयन शुल्क 400/- रू. आवश्यक रूप से देय होगा।
* भोजन एवं आवास की व्यवस्था नि:शुल्क होगी।
* शिविरार्थी की आयु कम से कम 15 वर्ष तथा स्वस्थ हो।
* शिविरार्थी अपने साथ ग्रीष्म ऋतु अनुकूल पहनने के कपड़े व बिस्तर, कान तक की लाठी, सफेद शर्ट, खाकी नेकर, सफेद कपड़े के पीटीशूज सफेद मोजे, सफेद सेण्डो बनियान, दो रंगीन फोटो, 100 पृष्ठ की कॉपी, पेन, टॉर्च, तेल साबुन आदि आवश्यक सामान लावें।
* शिविरार्थी को शिविर की नियमित दिनचर्या एवं अनुशासन में रहना अनिवार्य होगा। अनुशासन भंग करने की स्थिति में शिविर से पृथक् कर दिया जावेगा।
* शिविरार्थियों को 26 मई दोपहर तक शिविर स्थल पर पहुंचना अनिवार्य है।
* शिविर में कीमती सामान घड़ी, अंगूठी, सोने, चांदी के आभूषण एवं चल दूरभाष (मोबाइल) आदि नहीं लावें।

नोट- शिविरार्थियों से शिविर के दौरान चल दूरभाष पर पूर्णत: प्रतिबंध होगा, अत: मोबाईल साथ न लावें।

अपील व निवेदन- इस विशाल शिविर में प्रबंधन, भोजन, आवास, मार्ग-व्यय, मानदेय आदि पर पर्याप्त व्यय होगा। अत: सभी दानी-महानुभावों व आर्य समाजों से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/धनादेश आदि आर्य समाज, श्रीगंगानगर के नाम से भेजें। दानी महानुभाव एक दिन, एक समय का भोजन, नाश्ता अथवा घी, आटा, गेहूँ, चावल, चीनी, तेल, दाल, दूध, फल आदि देकर भी सहयोग कर सकते हैं।

-मंत्री गौर मोहन आर्य

अव्यक्त प्राणी आदि में हैं मध्य में दिखते सभी। फिर अन्त में अव्यक्त, क्या इसकी उचित चिन्ता कभी।।

देश के नौजवान की बदलती तस्वीर और नशे की लत

भारत देश प्राचीन समय से ही एक बहुत गौरवशाली देश रहा है। भारत की सभ्यता और संस्कृति दुनियां की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता और संस्कृतियों में से एक है। भारत के नौजवान युवक एवं युवियाँ श्रेष्ठ संस्कारों से पोषित हुआ करते थे। भारत देश का श्रवण कुमार अपने माता-पिता की इच्छानुसार लकड़ी की कावड़ बनवाकर और दोनों को उसमें बिठाकर समस्त तीर्थस्थलों की यात्रा करवाने के लिए चल पड़ा था। इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपने माता-पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर अयोध्या के राज सिंहासन को छोड़कर 14 वर्ष के वनवास के लिए राजप्रासाद से नंगे पाँव ही निकल पड़े थे। योगीराज श्री कृष्ण ने अपने माता-पिता को जेल से आजाद करवाया और पापी कंस को मारकर संसार से विदा किया था। पाँचों पाण्डवों ने महाभारत का युद्ध लड़ा और अन्यायी, अधर्मी एवं अत्याचारी कौरवों को समर में पराजित कर सारे देश में एक न्यायकारी शासन की स्थापना की थी। गुरु चाणक्य और सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने अएंयास, अत्याचारी और अन्यायी घनानन्द का समूल नाश कर सारे देश में एक सभ्य, शालीन और सुशासन की स्थापना की थी। और इसके साथ ही विदेशी आक्रान्ता सिकन्दर से भी देश को बचाया था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने देश, धर्म, योग, वैदिक संस्कृति उच्चादर्श एवं चारित्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए घर-बार तथा सांसारिक सुख-सुविधाओं को त्यागकर सन्यास ग्रहण कर लिया था। स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तान का परचम सारे संसार में फहराया था। इसी पावन भूमि पर महाराणा प्रताप सरीखे वीर और प्रतापी राजा पैदा हुए जिन्होंने हजारों कष्ट सहकर भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। इसी भारत भूमि पर ही तांत्याँ टोपे, मंगल पाण्डे, भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी जैसे स्वराज प्रेमी, देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी और क्रान्तिकारी वीर पैदा हुए जिन्होंने हँसते-हँसते मातृभूमि के लिए अपने प्राणों तक को भी न्योछावर कर दिया था। इस प्रकार हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत के नौजवान अति पराक्रमी, चरित्रवान, विद्वान, कर्तव्यनिष्ठ और देशभक्त हुआ करते थे।

इस देश की स्त्रियाँ भी अपने पराक्रम और सद्चरित्र में दुनिया में किसी से पीछे नहीं थी। हमारे देश की स्त्रियाँ वीरांगनायें, बहादुर, चरित्रवान, निडर, देशभक्त, स्वामीभक्त, निष्ठावान और पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली होती थी। इसी धरा पर सीता, सावित्री, रानी लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय, दुर्गावती, कर्णवती, पद्मिनी, सरोजिनी नायडू लक्ष्मी सहगल और इन्दिरा गांधी जैसी अनेक स्त्रियाँ पैदा हुई हैं, जिन्होंने देश का मान-सम्मान और गौरव बढ़ाया है। इन सभी वीरांगनाओं का संसार में अद्वितीय स्थान है। ये भारत देश इन सभी साहसी स्त्रियों के त्याग, बलिदान, शौर्य और साहस को कभी भूल नहीं सकता है। इस प्रकार भारत देश के स्त्री एवं पुरुष दोनों ही समान रूप से संसार के अन्य देशों के स्त्री एवं पुरुषों की अपेक्षा बहादुर एवं चरित्रवान हुआ करते थे।

कालांतर में देश गुलाम हुआ। विदेशी आक्रान्ता, लुटेरे और विध्वंसकारी इस धरती पर आये। उन्होंने जान बूझकर यहां ऐसा कुचक्र चलाया कि यहाँ के नौजवानों में जो उच्चादर्श एवं नैतिक मूल्य स्थापित थे, उनमें कमी आ गई। यह विदेशी लोगों की एक सोची-समझी चाल थी। इसके लिए उन्होंने यहां नशीली चीजों और मादक पदार्थों को भारत के बाजारों में परोसा। विदेशी लोग बाहर से अंग्रेजी शराब, सिगरेट, हेरोईन, स्मैक, चरस, गाँजा, ड्रग्स आदि नशीले एवं मादक पदार्थ लेकर आये और उनको बिक्री के लिए खुले रूप से दुकानों पर रखा। देश के नौजवानों ने शौक के लिए उनको खरीदा और इनका सेवन किया। धीरे-धीरे ये उनकी आदत में शुमार हो गया। और जो कार्य उन्होंने मौज-शौक के लिए किया था आगे चलकर वही उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ। इस नशे की लत के कारण ही हमारे नौजवानों में स्थापित अच्छे संस्कार और चारित्रिक मूल्यों का पतन हो गया। हमारा नौनिहाल जो चरित्रवान, संस्कारी, सदाचारी, ईमानदार, आज्ञाकारी और कर्तव्यनिष्ठ था, उसमें इन बातों की कुछ कमी आ गई। देश का युवा शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो गया। जवान अवस्था में ही उसके शरीर में भंयकर बीमारियां यथा कैंसर, हृदय एवं फेफड़ों की बीमारी गुर्दे एवं किडनी की खराबी तथा लीवर सम्बन्धी बीमारियाँ होने लगी।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ और हमनें प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया। आजादी के बाद हमनें ये सपना संजोया था कि विदेशी राज और विदेशियों के कारण देश की जनता में जितनी भी कुरीतियाँ और कुसंस्कार आ गये थे, उन सभी का अंत होगा। और हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित उच्चादर्श, परम्परायें, श्रेष्ठ संस्कार और उच्च चारित्रिक मूल्य दुबारा स्थापित होंगे। देश के नौजवान सारे संसार के सामने एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करेंगे। भारत एक बार फिर से जगत्गुरु का दर्जा हॉसिल करेगा। किन्तु दुर्भाग्यवश इस प्रकार का सपना अभी तक सच साबित नहीं हो सका है। स्वतंत्र भारत में जो भी सरकारें बनी उसने ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया जिससे कि देश का नौजवान, युवाशक्ति सन्मार्ग एवं सही डगर पर चलते हुए, राष्ट्र के समक्ष उपस्थित चुनोतियों के समाधान में एक सकारात्मक भूमिका अदा करते हुए, अपने जीवन को आगे बढ़ायें। भारत को एक मजबूत एवं शक्तिशाली राष्ट्र बनने की राह में उपस्थित चुनौतियों का सामना करने में राष्ट्र एवं सरकार की राह को आसान करें। बल्कि सरकार की कुछ गलत नीतियों, निर्णयों एवं अदूरदर्शी कानूनों के कारण हमारा नौजवान कुछ गलत आदतों का शिकार हो रहा है। उदाहरणार्थ जिस देश में कभी दूध-दही और घी की नदियाँ बहा करती थी दुर्भाग्यवश वहां आज शराब की नदियाँ बह रही है। शराब की दुकाने हर गांव, गली, मौहल्ले और शहर के नुक्कड़ पर मिलती है। अखबारों में, टीवी पर, पत्र-पत्रिकाओं में नशे की चीजों के खुलेआम विज्ञापन आते हैं। दुकानों पर सिगरेट, बीड़ी, चुर्री, गुटखा, तम्बाकू आदि खुलेआम बिक रहे हैं। विद्यालयों में नैतिक, यौगिक एवं वैदिक शिक्षा का अभाव हैं। नशा संबंधी चीजों की बिक्री करने वाले और नशाखोरों को देने के लिए कठोर दण्ड का अभाव हैं। टीवी एवं इंटरनेट पर अश्लीलता की पराकाष्ठा है। देश की शिक्षा प्रणाली एवं पाठ्यक्रम पश्चिमी सभ्यता पर आधारित है। इन सभी चीजों को देखकर आज की युवा पीढ़ी अपना सही रास्ता भटकती जा रही है। देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का ह्रास हो रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं

फिर देखकर निज धर्म, हिम्मत हारना अपकर्म है। इस धर्म–रण से बढ़ न क्षत्रिय का कहीं कुछ धर्म है।

श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर

दिनांक 5 मई 2013 रविवार को प्रातः 9.30 बजे श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति द्वारा श्री च्यवन भार्गव के सहयोग से उनकी माता स्व. श्रीमती निर्मला भार्गव धर्मपत्नी श्री जगदीश प्रसाद भार्गव की स्मृति में 51वाँ नि:शुल्क एलोपैथिक, होम्योपैथिक चिकित्सा एवं जाँच शिविर स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, आर्य समाज, स्वामी दयानदं मार्ग, अलवर में आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने रिबन काटकर किया।

शिविर में 250 रोगियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया जिनका Hb ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, P.F.T., ईसीजी, बॉडी मास आदि की च्यवन भार्गव द्वारा सिपला कम्पनी के सहयोग से नि:शुल्क जाँच करवायी गयी। लिपिड प्रोफाइल, थायराइड, लिवर एवं किडनी फंक्शन की क्योरवैल डायग्नोस्टिक सेन्टर की ओर से रियायती दरों पर जाँच की गयी।

डॉ1 देशबंधु गुप्ता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.) ने लगभग 65 रोगियो, डॉ. गोपाल गुप्ता नेत्र रोग विशेषज्ञ ने लगभग 35 रोगियों, डॉ. दिनेश शर्मा जिला मातृ शिशु एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.) ने लगभग 60 रोगियों, डॉ. अंजु गुप्ता बी.डी.एस. ने लगभग 40 रोगियों तथा डॉ. बी.एल.सैनी D.H.M.S., M.S. (Elec. Med.) ने 70 रोगियों को शिविर में अपनी नि:शुल्क सेवाऐं दी।

रोगियों को आवश्यकतानुसार श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति द्वारा नि:शुल्क दवाइयाँ दी गयी। शिविर में सर्वश्री प्रदीप कुमार आर्य, अशोक कुमार आर्य, कै. रधुनाथ सिंह, कमला शर्मा, सुमन आर्य, छबीलदास पावा, सत्यपाल आर्य, रामनारायण सैनी, शिव कुमार कौशिक, अशोक तनेजा, निहाल सिंह, धर्मवीर आर्य, अंजू भार्गव, दिनेश भार्गव, विनोद भार्गव, के.एम. भार्गव, सुनील आर्य, रघुवीर आर्य, हेमराज कल्ला, बिशन कालरा, ओमप्रकाश तनेजा, संतोष अरोड़ा, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, इन्द्रा आर्य, ईश्वरी देवी, दिविशा आर्य आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। *- कमला शर्मा, उपप्रधान*

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजस्थान

'गुडिया' प्रकरण-दोषियों को मृत्यु दण्ड व अश्लीलता पर अविलम्ब रोक की मांग

जयपुर 22 अप्रैल दिल्ली में 15 अप्रैल 2013 को घटित मासूम के साथ दुष्कर्म जघन्य एवं अनैतिकता की पराकाष्ठा है। समाज एवं राष्ट्र इससे आहत है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं आर्य समाज इसकी निन्दा करता है। परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने दोषियों को मृत्यु दण्ड दिए जाने की मांग के साथ सभी टी.वी. धारावाहिकों, फिल्मों और विज्ञापनों के निर्माण एवं प्रदर्शन पर अविलम्ब रोक लगाई जाए जो अश्लील, क्रूरतापूर्ण एवं मानवीय संवेदना शून्य हों, जिनके कारण समाज और राष्ट्र में अपराधवृत्ति एवं अनाचार पनपते हो। यश ने इस आशय का पत्र महामहिम राष्ट्रपति को भेजा है। -कार्यालय सचिव

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्वावधान में बुधवार को मधुस्मृति संस्थान में निराश्रित बच्चों के बीच वस्त्र टि-शर्ट्स, चप्पल तथा बिस्किट का वितरण किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह की मुख्य अतिथि डीएवी स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम थी तथा अध्यक्षता आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने की।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि यह जरूरी नहीं है कि शिक्षा कागज और पेंसिल के द्वारा ही मिले। जीवन हमें हर पल कुछ न कुछ सिखाता रहता है। इसलिए हर समय हर वस्तु, हर व्यक्ति से शिक्षा प्राप्त करते रहना चाहिए।

अध्यक्षता करते हुए जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ड़ा ने कहा कि जो व्यक्ति अन्यों के लिए जीता है, उसी का जीवन सफल है। मनुष्यों को दूसरों के दु:खो को दूर करने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए इस प्रकार के कार्यो में आर्य समाज हमेशा से आगे रहा है आर्य समाज ने समाज के प्रत्येक वर्ग में उपस्थित होकर सेवा कार्य किए है।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि व्यक्ति अपना जीवन स्वयं बनाता है। उसे जीवन के लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ना चाहिए। उसे समाज के विकास में अपना योगदान देते रहना चाहिए। आर्य समाज के विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि व्यक्ति का निर्माण समाज के द्वारा ही होता है। अत: हमें अपने जीवन के लिए समाज के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

जिला मंत्री कैलाश बाहेली ने कहा अच्छे कार्य की सुगंध चारों ओर फैलती है जैसे फूल की सुगंध हवाओं के साथ सभी दिशाओं में फैलती है। पं. रामदेव शर्मा ने कहा मनुष्य ही दूसरे के दु:ख को दूर कर सकता है वही दूसरों में सुख वृद्धि कर सकता है यह परोपकार से ही सम्भव है मनुष्य को अपने इस शरीर के माध्यम से परोपकार करना चाहिए।

डी.एवी पब्लिक स्कूल कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने कहा समाज में व्यक्ति को स्वयं अपने शुभ कर्मो से श्रेष्ठ स्थान बनाना पड़ता है जो व्यक्तिक कुछ श्रेष्ठ कर सकता है वही आगे बढ़ता है।

इसके बाद जे.एस दुबे तथा संस्थान की महासचिव बृजबाला निर्भीक ने मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी। संस्थान के बच्चों की ओर से भी कर्णप्रिय गीतों की प्रस्तुति दी गई। जिला सभा के मंत्री कैलाश बाहेती ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर रामदेव शर्मा, श्रीमती मधु शर्मा, श्रीमती पुनम चढ्डा सहित कई लोग मौजूद थे।

कैलाश बाहेती, मंत्री

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

घर में पनपते रावण

देश में दुष्कर्म के जो नए-नए मामले सामने आ रहे है, वह बहुत चिंताजनक है। दामिनी सामूहिक दुष्कर्म प्रकरण ने तो पूरे भारत की आत्मा को झकझोर कर रख दिया। यह तो खैर अभी भविष्य पर निर्भर है कि दामिनी के वहशी दरिन्दों को किस प्रकार की सजा मिलेगी लेकिन इसी के साथ घरों में जिस तरह से रावण पैदा हो रहे है, उन्हें कैसे रोका जा सकेगा? पिछले माह अलवर जिले में एक ससुर ने अपनी पुत्रवधु की अस्मत लूट ली। पिछले दिनों जयपुर की खबर थी कि नव वर्ष का जश्न मनाते एक भाई ने अपनी ही बहन को हवस का शिकार बना दिया। राजधानी दिल्ली में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें रिश्ते में लगने वाले लोगों ने ही रिश्तों को हवस की दरिन्दगी में तार-तार कर दिया। एक आधुनिक परिवार की महिला अपने कार ड्राइवर से ही हवस की पूर्ति करती पकड़ी गई वहीं एक फैक्ट्री के मालिक ने घर की नौकरानी को ही हवस की पूर्ति का महिनों से साधन बना रखा है। हाल ही अलवर जिले में ही एक भाई अपनी नाबालिग बहन को लेकर फरार हो गया।

अभी हाल में ही अलवर शहर शिवाजी पार्क के इलाके में एक पिता द्वारा अपनी नवीं कक्षा में पढ़ने वाली नाबालिक लडकी से 2 महा से बलातकार कर रहा था। लडकी को पिता द्वारा डरा धमकाकर किसी को न कहने को कह रखा था लडकी डरी व सहमी रहती थी। लडकी की माता को शक हुआ तो मां ने पिता को रोका तो उसने अपनी पत्नी को भी जान से मारने की धमकी देकर चुप करा दिया। संयोग से लडकी की नानी घर पर आई हुई थी लडकी ने अपनी नानी को आप बीती बताई। नानी ने पुलिस में रिपोर्ट कराई और लडकी के बयान कराये। लडकी का डाक्टरी मुआयना कराया गया। उस 37 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट ने 21 दिनके रिमांड पर जेल भेज दिया।

गंभीर सवाल यह है कि जब घर में ही रावण व कंस बढ़ रहें है और कई मामलों में स्त्रियां व युवतियों की ही सहमति बनी हुई है अथवा पाप पर पर्दा डाले हुए है, फिर बढ़ते योन शोषणों पर कैसे अंकुश लग पाएगा? इस सत्य से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते बोलबाले, टी.वी. नेट व मोबाईलों में अश्लील ब्लू फिल्मों के प्रदर्शन, होटलों व क्लबों में देर रात तक चलने वाली रेव पार्टियां, पनपते मसाज सैन्टर, कैट वॉक व सुन्दर दिखाने की प्रतियोगिताएं वासना की आग को बढ़ा रहे हैं। चिन्ता की बात यह है कि आधुनिकता की अंधी सोच ने खून के रिश्तों को भी पलीता लगाना शुरु कर दिया और घर में बेटी-बहनों के अपनों से ही सुरक्षित रहने पर प्रश्न चिन्ह लगने लगे हैं। वह सारी स्थितियां निश्चित ही किसी भयावह हालत से कम नहीं है लेकिन सवाल यह है कि घर में पनपते रावणों से कैसे सुरक्षित रहा जाए। बाहरी दरिन्दों से तो कानून भी सख्ती से निपट लेगा लेकिन घर में ही पैदा होते रावणों को कौन ध्वस्त करेगा?

इस संदर्भ में यह कहना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि हवस की बढ़ती भूख को अपनी पुरातन संस्कृति व संस्कारों के अपनाने से ही उसे खत्म किया जा सकता है। यह विडम्बना है कि भारतीय संस्कारों का जिस तरह से क्षरण हो रहा है, उस तरफ कि खासकर शिक्षित व सभ्य समाज चिन्तित नहीं है। आधुनिकता की सोच जिस संक्रमणकाल की स्थितियां उत्पन्न कर रही है, वह भविष्य के लिए बहुत बड़े खतरे का संकेत है। घर में राम, कृष्ण, विवेकानन्द, दयानंद, भगतसिंह, सीता, सरस्वती, दुर्गा जैसी सोच व विचारधारा ही संस्कारों को पुर्नजीवित रख सकेगी। आदमी के भीतर पनपते पशुवत को खत्म करने के लिए भारतीय संस्कारों को जड़ से अपनाना ही पड़ेगा वर्ना घर में बढ़ते रावणों को परास्त करना बहुत मुश्किल होगा।

-ओम प्रकाश संपादक- राज. टाईम्स

वैदिक साधना आश्रम तपोवन नालापानी देहरादून द्वारा युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर (आवासीय)

युवती वर्ग- 5 जून सायंकाल से 9 जून प्रातःकाल तक

युवक वर्ग- 19 जून सायंकाल से 23 जून प्रातःकाल तक

आयु सीमा- 14 वर्ष से 32 वर्ष तक

स्थान- वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निर्देशक - आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय- पूर्ण व्यक्तित्व विकास, स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंत्रण, सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एवं सार्वजनीन सत्य सिद्धांतों का परिचय आदि।

भाषा- हिन्दी एवं अंग्रेजी

नियम- 1. शिविर में पूर्ण काल अनुशासित रहना अनिवार्य है।

2. प्रतिभागी की जिम्मेदारी माता-पिता अथवा प्रेरक की होगी एवं उनकी लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी।

शिविर निःशुल्क है। इस ईश्वरीय कार्य में भावना पूर्वक दिये गये सहयोग स्वीकार किया जायेगा।

1. श्री विजेश गर्ग, देहरादून मो. 09410315022 (समय प्रातः 10 से सायं 4 [illegible] तक)
2. श्री सत्यप्रिय जी, दिल्ली मो. 09990062964 (समय प्रातः 8.30 [illegible] बजे तक)

दर्शन कुमार अग्निहेत्री, प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।